युगों की अवधारणा : व्याख्या एवं स्पष्टीकरण

मनुस्मृति[1] (1/65-71) के अनुसार, मानव वर्षों और दिव्य वर्षों में चतुर्युग के विवरण का सारांश निम्नलिखित हैः-

युग	मुख्य अवधि	संध्या + संध्यांश	कुल अवधि	1 दिव्य वर्ष=360 मानव वर्ष (इसलिए 360 से गुणा)
सतयुग	4000	400+400	4800 वर्ष	17, 28, 000
त्रेतायुग	3000	300+300	3600 वर्ष	12, 96, 000
द्वापर युग	2000	200+200	2400 वर्ष	8, 64, 000
कलियुग	1000	100+100	1200 वर्ष	4, 32, 000
कुल	**10,000**	**2000**	**12,000 वर्ष**	**43,20,000 वर्ष**

कई प्राचीन एवं आधुनिक वैज्ञानिकों एवं विद्वानों का मानना है कि चतुर्युग (सतयुग, त्रेता युग, द्वापर युग और कलियुग) में मूल रूप से केवल 12,000 मानव वर्ष ही थे। कुछ अल्पाधिक वर्षों सहित चतुर्युग के अवरोही तथा आरोही क्रम भी थे। परन्तु सुदूर प्राचीन काल में किसी समय एक मानव वर्ष को देवताओं के एक दिव्य दिवस के बराबर मानकर चतुर्युग को 12,000 दिव्य वर्षों का मान लिया गया (सूर्य की उत्तरायण चाल के 180 दिन + सूर्य की दक्षिणायण चाल के 180 दिन = 360)। इसके परिणामस्वरूप चतुर्युग को 43,20,000 वर्षों (12000 x 360) का मान लिया गया था।

मनुष्यों के लिये 'दिव्य वर्ष' लागू करने का क्या औचित्य हो सकता था और फिर सूर्य की उत्तरायण और दक्षिणयाण चाल के 360 दिनों के साथ चतुर्युग के 12000 वर्षों को गुणा करने का भी क्या औचित्य हो सकता था?

इस प्रश्न का उत्तर ढूंढने के लिये मैंने मनुस्मृति के संदर्भों को समझने का प्रयत्न किया। मनुस्मृति के अध्याय 1 के श्लोक 65, 67, 69-71 में चर्तुयुग का निम्नलिखित विवरण दिया गया है-

“65. सूर्य मनुष्यों और देवताओं दोनों के लिए दिन और रात का विभाजन करता है। उसमें प्राणियों के लिए सोने के लिए रात और कर्म करने के लिए दिन होता है।
67. मनुष्य के एक वर्ष में देवताओं का अहोरात्र (दिन और रात) होता है। उसमें उत्तरायन दिन और दक्षिणायन रात होते हैं।
69. ऐसा माना गया है कि कृतयुग (सतयुग) में चार हजार वर्ष होते हैं। इसकी पूर्ववर्ती संध्या (संध्या) चार सौ वर्ष की होती है और उत्तरवर्ती संध्या (संध्यांश) में भी उतने ही वर्ष होते हैं।
70. अन्य तीन युग अपनी संध्या तथा संध्यांश के साथ एक हजार की संख्या से कम होते जाएंगे (अर्थात् 3000+300+300, 2000+200+200, 1000+100+100 हो जाएंगे)
71. इस प्रकार इन 12000 वर्षों को मानवों का एक चतुर्युग कहा गया; उसे देवताओं का एक युग कहा जाता है।”

(इनसे मिलते-जुळते सन्दर्भ श्रीमद भागवद महापुराण के तीसरे स्कंध में 11 - 13 अध्याय में भी मिलते हैं)

अत्यंत प्राचीनकाल में, उत्तरायण (सूर्य की 180 दिनों की उत्तर दिशा में चाल) और दक्षिणायण (सूर्य की 180 दिनों की दक्षिण दिशा में चाल) के लिये देवताओं के एक दिन और एक रात की अभिव्यक्ति की इस तरह व्याख्या कर दी गई कि ये 360 दिन देवताओं का एक दिन और एक रात होते हैं। संभवत: यह व्याख्या ध्रुव देवता के एक दिन और एक रात के लिए की गई थी। फलस्वरूप 360 मानव वर्षों को देवताओं के एक वर्ष के बराबर मान लिया गया। तत्पश्चात् चतुर्युग को 12000 दिव्य वर्षों का मानकर, इन 12000 दिव्य वर्षों को 360 से गुणा करके चतुर्युग की समयावधि 43,20,000 मानव वर्ष निर्धारित कर दी गई।

अत्यंत प्राचीन काल से आधुनिक समय तक अनेक विद्वानों ने इस व्याख्या से असहमति प्रकट की है परन्तु फिर भी अधिकांश लोग अनेकों वर्षों से इस व्याख्या के औचित्य की समीक्षा किए बिना ही इसे शत प्रतिशत सही मानते आए हैं –

1. महाभारत में बड़े स्पष्ट शब्दों में चतुर्युगों की व्याख्या करते हुए कृतयुग को 4000 वर्षों का, त्रेतायुग को 3000 वर्षों का, द्वापर को 2000 वर्षों का तथा कलियुग को 1000 वर्षों का कहा गया है; वहां किसी भी दिव्यवर्ष का सन्दर्भ नहीं है (भीष्म पर्व - अध्याय 10)।

2. 2500 से भी अधिक वर्ष पहले, संस्कृत के प्रख्यात विद्वान, मेधातिथि ने चतुर्युगों की इस व्याख्या में आई त्रुटि पर विचार करने के पश्चात चतुर्युग की अवधि को 12000 मानव वर्ष ही निर्धारित किया था। पिछले 60 वर्षों में कई विद्वानों, संतों और वैज्ञानिकों ने भी श्री मेधातिथि के इस विचार से सहमति प्रकट की है। जग्गी वासुदेव जी, स्वामी श्री युक्तेश्वर गिरी, पण्डित भगवद्दत्त सत्याश्रवा, श्री के. एम. गांगुली, श्री रिचर्ड थॉम्पसन और कई अन्य विद्वानों ने 12000 मानव वर्षों के चतुर्युग की व्याख्या करते हुए कई पुस्तकें एवं आलेख लिखे हैं और व्याख्यान भी दिए हैं। इनके माध्यम से उन्होंने चतुर्युग की इस अवधारणा का औचित्य भी समझाया है।
3. इन विद्वानों के अनुसार एक चतुर्युग में 12000 मानव वर्ष होते हैं तथा चतुर्युग के अवरोही तथा आरोही चक्रों के बीच कुछ अल्पाधिक वर्ष भी हो सकते हैं। आधुनिक खगोल विज्ञान भी यह स्वीकार करता है कि पृथ्वी अपना एक अग्रगमन चक्र पूरा करने में 25920 वर्ष का समय लेती है। लगभग इतने वर्षों में ही चतुर्युगों का अवरोही तथा आरोही क्रम भी पूर्ण हो जाता है। यहां तक कि ग्लेशियोलौजी ने भी इस विचार का समर्थन किया है और यह माना है कि यह संभवत: सातवां मन्वन्तर चल रहा है।
4. आदरणीय जग्गी वासदेव जी ने चार युगों के चक्र की व्याख्या करते हुए कहा कि "विषुवों का अग्रगमण वह समयावधि है जो पृथ्वी की धुरी सभी बारह राशियों का एक चक्र पूर्ण करने के लिए लेती है। पृथ्वी अपनी धुरी पर एक डिग्री पीछे होने में 72 वर्ष लेती है और 360 डिग्री का अग्रगमण चक्र पूर्ण करने में 25,920 वर्ष लेती हैं। आधी यात्रा 12,960 वर्ष में पूरी हो जाती है। इस प्रकार एक चतुर्युग का चक्र पूर्ण हो जाता है। सतयुग की अवधि 5184 वर्ष, त्रेता युग की अवधि 3888 वर्ष, द्वापर युग की अवधि 2592 वर्ष तथा कलियुग की अवधि 1296 वर्ष होती है। चार युगों की इस अवधि का कुल जोड़ 12,960 वर्ष होता है। चतुर्युग के अवरोही और आरोही चक्र 25920 वर्षों में पूर्ण हो जाते हैं। सद्गुरु जी ने चतुर्युगों के इन अवरोही और आरोही चक्रों का संबंध मानव चेतना की अधोगामी और उर्ध्वगामी गति से भी जोड़ा है [2-3]। शुभ समाचार यह है कि उनका मानना है कि कलियुग नहीं अपितु वर्तमान में द्वापर युग अपने आरोही चरण में चल रहा है। आदरणीय जग्गी वासदेव जी ने निम्नलिखित चित्र की सहायता से धरती के विषुवों के एक पूर्ण अग्रगमन चक्र को चतुर्यगों के चक्र के साथ जोड़कर समझाया है।

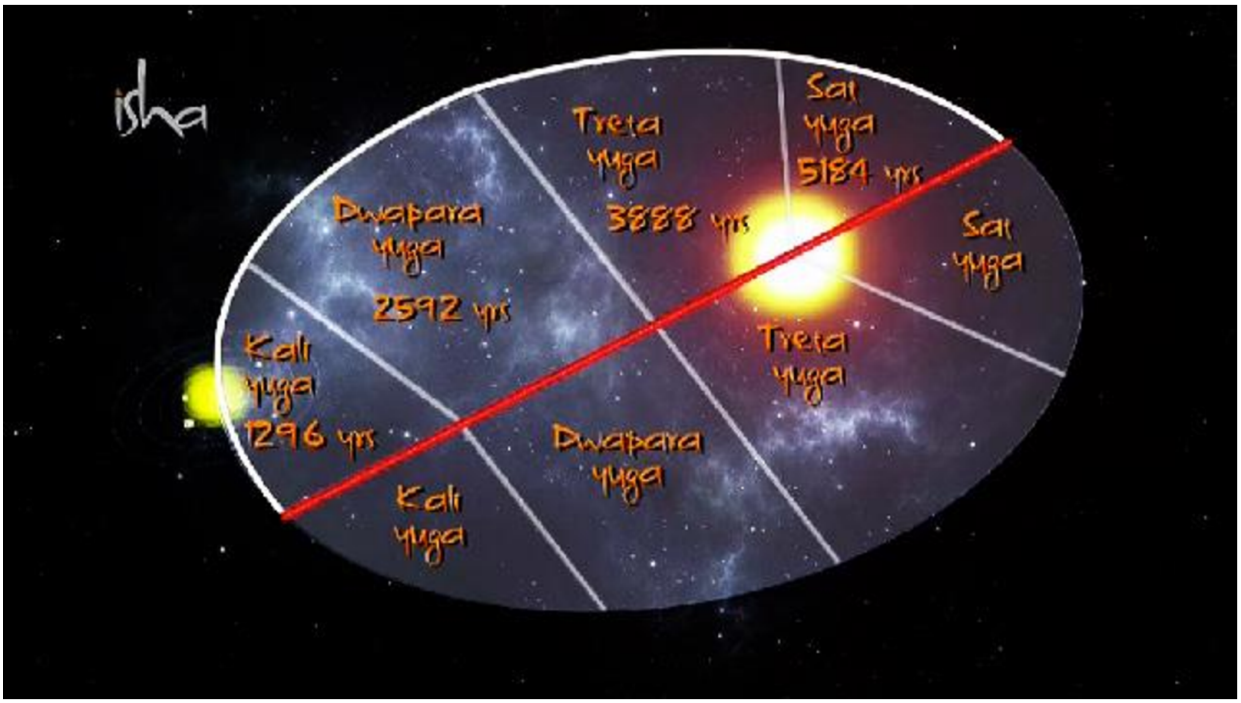

आदरणीय जग्गी वासदेव जी ने यह भी कहा है कि सौर मंडल, सूर्य और ग्रहों को साथ लेकर, आकाशगंगा में घूम रहा है। सौर मंडल किसी बड़े सितारे के चारों ओर एक चक्र को पूरा करने में 25,920 साल लेता है। पृथ्वी पर होने वाले प्रभावों को देख कर हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि यह बड़ा सितारा, जिसके इर्द-गिर्द हमारा सौर मंडल घूम रहा है, कक्षा के केंद्र में स्थित नहीं है, लेकिन कहीं न कहीं पक्ष में स्थित है। जब भी हमारा सौर मंडल इस बड़े सितारे के करीब आता है, हमारे सौर मंडल में रहने वाले सभी प्राणियों में अधिक संभावनाएं होती हैं। जब भी हमारा सौर मंडल इस बड़े सितारे से दूर हो जाता है, तो हमारे सौर मंडल में रहने वाले प्राणियों की संभावना निम्नतम स्तर पर आ जाती हैँ। इसीलिए जब भी हमारा सौर मंडल "सुपर सन" के निकट आएगा तो सत्य युग का प्रारम्भ हो जाएगा। उस समय मानव मन अपनी उच्चतम क्षमता में होगा। लोगों की जीवन को समझने की, बातचीत करने की तथा खुशी से रहने की क्षमता भी अपने उच्चतम शिखर पर होगी।

स्वामी श्री युक्तेश्वर गिरी ने आंतरिक जगत के मानसिक गुणों के साथ विषुव के अग्रगमन का सहसंबंध स्थापित करके चतुर्युगों के 12000 के अवरोही और 12000 आरोही वर्षों की व्याख्या की है। उन्होंने यह स्पष्ट किया कि सूर्य विष्णुनाभि नामक महाकेन्द्र के चारों ओर घूमता रहता है। यह विष्णुनाभि सार्वभौमिक चुम्बकत्व का केन्द्र है, जो ब्रह्मा जी का स्थान है। जब सूर्य विष्णुनाभि के निकटम आ जाता है, तब शरदकालीन विषुव मेष में पहले

बिन्दु पर आ जाता है। उस अवधि के दौरान मानसिक गुण सर्वाधिक विकसित हो जाते हैं, इसलिये यह सतयुग कहलाता है। जब सूर्य सबसे दूर के बिन्दु पर चला जाता है तब मानसिक गुण निम्नतम स्तर पर पहुँच जाते हैं और इसे कलियुग का समय कहा जाता है। स्वामी श्री युक्तेश्वर गिरी के अनुसार शरदकालीन विषुव 11501 ई.पू. के आसपास मेष के प्रथम बिन्दु में था, इस प्रकार उस समय मानव बुद्धि अपने सर्वश्रेष्ठ स्तर पर थी और तत्पश्चात, इसका ह्रास होना शुरू हुआ। इसीलिए 499 ई. के आस-पास अवरोही कलियुग के अंत में मानव प्रज्ञा सबसे कम स्तर पर थी। तत्पश्चात आरोही कलियुग के 1200 वर्ष बीत गए और वर्तमान में द्वापर युग चल रहा है।

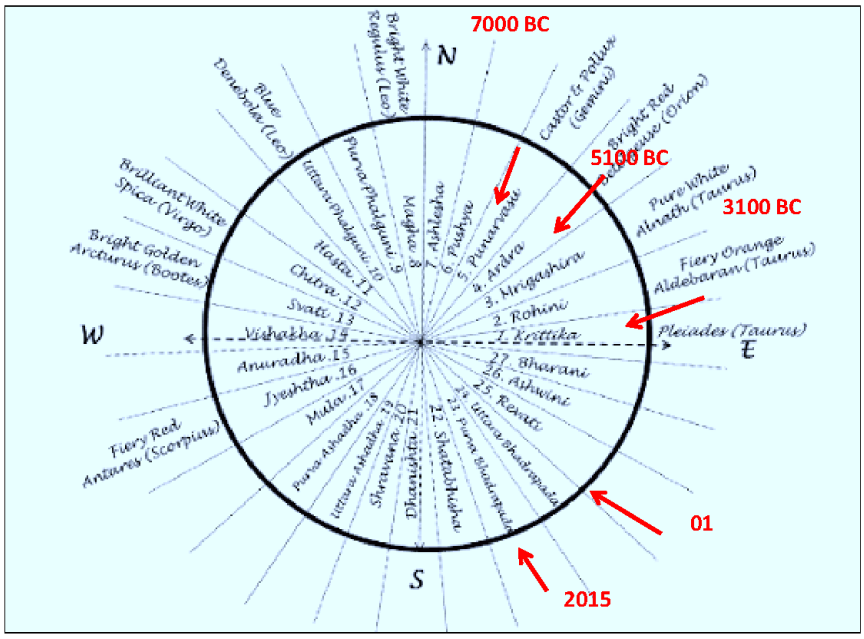

अब हम आधुनिक काल के खगोलविदों द्वारा तैयार किए गए अग्रगमन चक्र के माध्यम से वसंत विषुव और शरद अयनांत का अग्रगमन और युग चक्रों से उनका सहसंबंध समझेंगे –

Precession– Vernal Equinox and Winter Solstice through ages

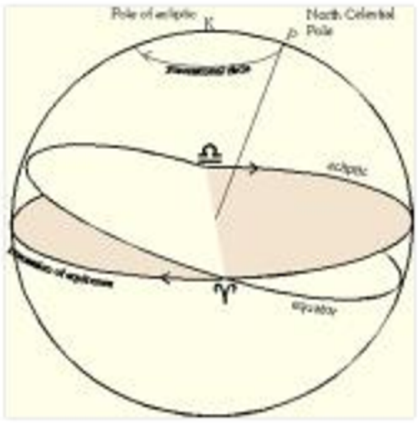

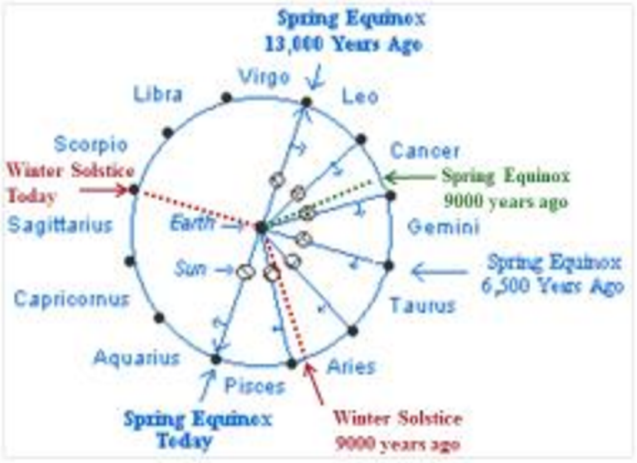

विषुव प्रत्येक 72 वर्षों में एक डिग्री और 25920 वर्षों में 360 डिग्री का अग्रगमण करते हैं। इस प्रकार लगभग 50.3 सेकेन्ड चाप प्रति वर्ष की दर क्रांतिवृत्त पथ पर पश्चिम की ओर संचलन करते हैं। कुल 27 नक्षत्र होने के कारण, विषुव 960 वर्षों में एक नक्षत्र से और 2160 वर्षों में एक राशि से पीछे रह जाते हैं [5]। यह दोहराने की आवश्यकता नहीं है कि शरदकालीन विषुव वसन्तकालीन विषुव का बिल्कुल उल्टा होता है। वर्तमान में शरदकालीन विषुव कन्या और सिंह राशि के बीच है। इसीलिए तो वसंतकालीन विषुव मीन राशि और कुम्भ राशि के बीच में है। रामायण युग के दौरान 7100 वर्ष पूर्व वसन्तकालीन विषुव मिथुन राशि में पुर्नवसु नक्षत्र में था। इस प्रकार यह आधुनिक स्थिति से लगभग आठ नक्षत्र पीछे था। यह चित्र आधुनिक खगोलशास्त्रियों द्वारा तैयार किया गया है। यदि घटते और बढ़ते युग चक्र के 24000 वर्षों को 25920 वर्षों से बदल दिया जाता है तो प्राचीन भारतीय खगोल विज्ञान की सभी व्याख्याएं सही और सटीक सिद्ध हो जाती हैं।

यदि हम आधुनिक खगोलशास्त्र के सिद्धांतों को देखें तो, चतुर्यगों की अवधि को 12000 वर्षों के स्थान पर 12960 वर्ष मानना होगा। या फिर अवरोही और आरोही क्रम के बीच में कुछ वर्षों का अल्पाधिक समय मानना होगा। 24000 वर्षों के अवरोही और आरोही चतुर्युगों के क्रम को 25920 वर्षों में बदलना होगा। एक वर्ष की समयावधि 360 दिनों की बजाय 365 दिन, 5 घंटे, 48 मिनट और 46 सेकेन्ड लेनी होगी। यह भी मानना होगा कि संध्या तथा संध्यांश प्रत्येक युग की अवधि में लचीलापन प्रदान करने के लिये होते हैं।

सुप्रसिद्ध इतिहासकार पंडित भगवददत्त सत्याश्रवा ने अपनी पुस्तक 'भारतवर्ष का बृहद इतिहास' में यह बताया है कि प्रभु श्रीराम का युग त्रेता और द्वापर की संधि अवधि में था और यह विक्रम संवत के शुरू होने से लगभग 5200 वर्ष पहले का समय था। उन्होंने यह भी कहा है कि श्री कृष्ण का जन्म द्वापर युग के अंतिम समय में हुआ था और उनके महानिर्वाण के पश्चात कलियुग शुरू हुआ। यह विक्रम संवत से लगभग 3200 वर्ष पहले का समय था। इस प्रकार इन्होंने रामायण और महाभारत के युगों के बीच लगभग 2000 वर्षों का अंतराल दिया [6]। श्री सत्याश्रवा ने दृढ़तापूर्वक कहा कि त्रेता और द्वापर युगों में निश्चित रूप से लाखों वर्ष की अवधि नहीं होती (सत्याश्रवा 2000, सातवां अध्याय)। श्री सत्यश्रवा ने यह भी कहा की प्राचीन काल की संस्कृत भाषा में शब्द 'सहस्राणि' का अर्थ एक हज़ार नहीं अपितु 'लगभग' होता था (सत्यश्रवा 2000, अध्याय 11, पृष्ठ 580)। उन्होंने इस तथ्य को उदाहरण देकर समझाया है।

उन्होंने चतुर्युगों के अवरोही और आरोही चक्र के बीच अंतराल की बहुत अलग व्याख्या की है जिसका उद्देश्य 24000 वर्ष के युगचक्र का 25920 वर्षों के युग चक्र के साथ सामंजस्य स्थापित करना भी है। उन्होंने सतयुग से पहले प्रचलित देवयुग (दिव्य युग) का संदर्भ देते हुए रामायण और महाभारत के पाठ से उन उद्धरणों का भी संदर्भ दिया है जिनमें कृत युग से पहले देव युग के प्रचलन का प्रसंग है। इस प्रकार उन्होंने दिव्य युग शब्द की अभिव्यक्ति के कारण पैदा हुई भ्रान्तियों को भी समझाने का प्रयत्न किया। उन्होंने यह भी कहा कि अवरोही और आरोही युगचक्रों के बीच में कुछ अतिरिक्त वर्ष भी हो सकते हैं। ध्यान देने योग्य बात यह है कि तारामंडल सॉफ्टवेयर का उपयोग करके रामायण और महाभारत के खगोलीय सन्दर्भों का तिथिकरण भगवदृत्त सत्यश्रवा द्वारा दिए गए तथ्यों को सही साबित करता है। रामायण में वर्णित घटनाओं की खगोलीय तिथियां 5100 ईसा पूर्व से संबंध रखती हैं जबकि महाभारत की खगोलीय तिथियां उन घटनाओं से संबंधित हैं जो 3100 ईसा पूर्व में घटित हुई थीं [7-8]। इस प्रकार आधुनिक तारामंडल सॉफ्टवेयर भी रामायण तथा महाभारत में 2000 साल का अंतराल ही देती हैं ।

एक और बात जो ध्यान देने योग्य है वो ये कि अधिकतर प्राचीन गणनाओं में एक वर्ष की अवधि 360 दिन मानी गई है जबकि वास्तव में एक वर्ष में 365 दिन, 5 घंटे, 48 मिनट और 46 सैकेन्ड होते हैं। एक वर्ष की लम्बाई में इस अंतर को युगों की अवधि में समायोजित करना आवश्यक है। इसके अतिरिक्त, यदि हम एक चतुर्युग की अवधि 43,20,000 वर्ष मानते हैं तो क्या हम यह एलान करने के लिए तैयार हैं कि कलियुग की अवधि 4,32,000 वर्ष है जिसमें से 4,27,000 वर्ष अभी शेष हैं? क्या हम यह सिद्ध करने का सामर्थ्य रखते हैं

कि श्रीराम के त्रेता युग और श्रीकृष्ण के द्वापर युग के बीच 9,27,000 वर्ष के अंतराल के बीच क्या घटनाएं घटित हुई? क्या रामायण के सन्दर्भों का कोई भी वैज्ञानिक प्रमाण नौ लाख वर्ष पहले से जोड़ा जा सकता है? क्या रामायण को नौ लाख वर्ष पुराना बता कर हम अपने इतिहास को मिथ्या कल्पना के क्षेत्र में नहीं धकेल रहे हैं ?

इसलिए हम अपने सन्तों और विद्वानों को चतुर्युग की परंपरागत व्याख्या की पुनर्समीक्षा करने का विनम्र निवेदन करते हैं। युगों के अर्थ में आई विसंगतियों को दूर करने के पश्चात् ही हम रामायण एवं महाभारत को काल्पनिकता के क्षेत्र से निकालकर वास्तविक प्राचीन इतिहास के क्षेत्र में ला सकेंगे जिससे उनका वास्तव में संबंध हैं। तत्पश्चात, हम विश्व के समक्ष विश्वसनीयता से दावा कर पाएंगे कि भारत की सभ्यता वर्तमान नूतन युग में विश्व की प्राचीनतम सभ्यता है तथा आर्य लोग भारतवर्ष के ही मूल निवासी थे जो हजारों वर्षों से स्वदेशी वैदिक सभ्यता का विकास करते आ रहे हैं।

परिशिष्ट 4 – संदर्भ सूची

1. मनुस्मृति (टेक्सट विद कुल्लुभट्ट कमेंट्री, इंग्लिश ट्रांसलेशन, श्लोक इंडेक्स एंड वर्ड इंडेक्स), मैत्रेयी देशपांडे, न्यू भारतीय बुक कॉर्पोरेशन, दिल्ली
2. सद्गुरू जग्गी वासुदेव, "मिस्टिक म्यूजिंग्ज़", विजडम ट्री द्वारा 2003 में प्रकाशित
3. 'द होली साइंस', स्वामी श्री युक्तेश्वर गिरी; प्रकाशक योगदा सत्संग सोसाइटी ऑफ इंडिया, पृष्ठ 9-24
4. सरोज बाला, 2018; रामायण की कहानी, विज्ञान की जुबानी – प्रभात प्रकाशन
5. पंडित भगवद्दत्त सत्यश्रवा, 2000. 'भारतवर्ष का बृहद् इतिहास'. प्रकाशक - प्रणव प्रकाशन , नई दिल्ली भाग 1 पृष्ठ : 80, 163
6. 'ऋग्वेद से रोबोटिक्स तक सांस्कृतिक निरंतरता' विषय पर दिनांक 3-4 फरवरी 2016 को जी.जे. यूनिवर्सिटी ऑफ साइंस एंड टेक्नॉलोजी, हिसार में आई-सर्व दिल्ली चैप्टर के सेमिनार और प्रदर्शनी में सरोज बाला की प्रस्तुति
7. 'महाभारत रीटोल्ड विद साइंटिफिक एविडेंसेज़', लेखक - सरोज बाला; डायलाग - क्वार्टरली जर्नल ऑफ़ आस्था भारती, वॉल्यूम 18 नंबर 3, जनवरी - मार्च, 2017